खुदा के खज़ानों की खजांची - दादी ईशू

ब्र.कु. सुदेश दीदी,
डायरेक्टर जर्मनी

परमात्मा जब परिवर्तन की गाथा लिखते हैं तो उसमें समय के ज्ञान के साथ कर्मों की गुह्य गति का ज्ञान भी होता है। उनके पास सर्व आत्माओं के कर्म-खातों को चुकतू करने की एक निराली विधि विधान है। जो चयनित आत्माओं के द्वारा परमात्मा सत धर्म, सत राज्य स्थापन कर रहे हैं। उस निराले कार्य में स्वयं विचित्र गुप्त ने दादी को अपने साथ चित्रगुप्त के रूप में शामिल किया। वे सबकी कर्म कहानी को जानते हुए भी इतनी न्यारी, निष्पक्ष, निर्माण और निश्छल भाव से रहीं। वे परमात्मा के दिए हुए कार्य में खरी उतरीं। और उस कार्य को सम्पूर्ण रीति से पूर्ण कर, फरिश्ता बन उड़ चलीं...

बाबा के हीरों के हार में से एक हीरा शिफ्ट हो गया, बाबा की भविष्य माला में। बाबा के कर्त्तव्य में, आदि से लेकर यज्ञ के स्थापना में, बाबा के अंग-संग, मम्मा के अंग-संग रह जो प्यार से पालना ली, वही पालना का स्वरूप ईशू दादी में दिखाई पड़ता था। यानी कि बाबा से उन्होंने जो कुछ लिया, प्राप्त किया उसी यथार्थ रूप में सबको साक्षात अनुभव कराया। और हमने भी उनसे ये अनुभव पाया। **वे ज्ञान सागर की गोल्डन गागर थीं। ज्ञान सागर बाप की लहरों को, रत्नों को गागर में समा कर हम सबके समक्ष रखा।** उस समय तो कोई विशेष रीति से ऐसी कोई भाषा तो नहीं थी, परंतु उन्होंने अपनी स्पेशल (शॉर्ट हैंड)लिखत को प्रगट किया। बाबा का ज्ञान बड़े अक्षरों में, बाबा स्वयं लिख कर देते थे तो दादी छोटे अक्षरों में हमारे तक पहुंचाने की सेवा करती थीं। बाबा के मुरली के एक भी रत्न को मिस नहीं होने दिया। तो ये विशेष महारथी रत्नों के साथ रहकर, अब तक जो भी हमें ज्ञान रत्न मिल रहे हैं ये उसी गोल्डन गागर द्वारा, जो ईशू दादी ने मुरली लिखी, रिपीट हो रही है। एक तरफ बाबा के विश्वास पात्र खज़ानों की खजांची और दूसरी तरफ बाबा के अमूल्य अनंत अविनाशी खज़ानों को हम सब को बाँटने वाली दादी ईशू, जो कि हम सबके जीवन का आधार है। ऐसी महान विभूति का किस तरह, किन शब्दों में आभार प्रकट करें! किस भाव से आपको श्रृद्धांजलि दें! जो हमारे पास ज्ञान रूपी ताजा-ताजा गर्म हल्वा पहुंचाने के निमित्त बनीं।

दूसरी बात वे खुदा की खत की कलम थीं। जो भी बाबा के पत्र आते थे, जैसे कि आपने सुना है कि कोई पढ़ नहीं सकता था क्योंकि एक तो सिंधी भाषा में होता और दूसरा बाबा की अपनी लिखित में। उसको पढ़ करके, उसी को बिल्कुल एक्यूरेट और एक्यूरेसी से, बिना किसी शब्द या भाव को चेंज किये, हुबहु ऑनेस्टी से उसी स्वरूप में लिखती थीं। पत्रों में कई प्राइवेट बातें भी होती थीं। पर्सनल लाइफ हिस्ट्री के भी पत्र भेजते थे, यज्ञ की परिस्थितियों के भी पत्र और सेवाकेन्द्रों के भी। ईशू दादी में हमने देखा वे ऐसी गंभीरता की खान थीं कि कभी भी उनके चेहरे ये मालूम नहीं पड़ता था कि उनको किसी की सिक्रेट बातों का भी मालूम है। ये सब जानते हुए भी उनके ऊपर कोई प्रभाव नहीं दिखता था। लगता नहीं था कि उनको कोई कर्म कहानी याद भी है। ऐसे लगता था कि बाबा सत धर्म, सत राज्य स्थापन कर रहे हैं और वे विचित्र गुप्त के साथ चित्रगुप्त भी थीं। सबकी कर्म कहानी को जानते हुए भी इतनी न्यारी, निष्पक्ष, निर्माण और निश्छल भाव से रहीं।

ऑफिस में बहुत बारी हमने ऐसा देखा कि बाबा- दीदी, दादी के साथ कुटिया में होते थे, और कुछ यज्ञ के बारे में बता रहे होते थे, ऐसे में ईशू दादी भी वहाँ न्यारी-प्यारी होकर लिखतीं। सबकुछ जानते हुए भी गम्भीरता से अपने में समा लेती थीं। **उन्होंने वो पत्र पढ़े, सुने, परन्तु जैसे दर्पण पर कोई चित्र आता है, जैसे ही सीन चेंज होता है, दर्पण पर उसका कोई निशान नहीं रहता, उसी की तरह थीं दादी।** उनका जीवन इतना निर्मल, स्वच्छ और शुद्ध, हृदय इतना पवित्र, न वायब्रेशन से, न दृष्टि से, न किसी प्रकार की वाणी से, व्यवहार से पूर्ण रूप से जैसे कि निश्छल, न्यारी, साक्षीदृष्टा, स्वच्छ ज्ञान गंगा। जो भी मिला पत्रों में वो सागर में चला गया, समा लिया।

वास्तव में रियल गोल्ड किसको कहा जाता है ये दादी से अनुभव किया। विघ्न तो बहुत आते थे इस बेहद यज्ञ में। इतने बड़े यज्ञ-कारोबार में नैचुरल होगा उतार चढ़ाव आयेंगे ही। तो हर परिस्थिति में दादी एकदम साक्षी दृष्टा रहतीं। बाबा के साथ, दादीयों के साथ रहते हुए भी सबके साथ ऑनेस्टी से रहीं। दादी हर जगह बाबा के साथ जाती थीं। यज्ञ के अकाउंट के

सम्बन्ध से, यज्ञ की संभाल के हिसाब से। बाबा उनको कॉन्फिडेंशियल सेक्रेटरी कहते थे। कौन-सी चीज़ कहाँ रखनी है, किससे सम्बन्धित है ये सब दादी जी देखभाल रखती थीं। परन्तु सब के साथ रहते हुए फ्लेक्सिबिलिटी बहुत थी। दादी के साथ भी ऐसे ही रहीं जैसे गोल्ड, मोल्ड हो जाता है। ऐसे ही हर परिस्थिति में, बाबा-मम्मा के साथ, ऐसे फिर दीदी-दादीयों के साथ, फिर दादी प्रकाशमणि के बाद, ईशू दादी जी मोहिनी बहन और मुन्नी बहन के साथ भी ऐसे ही फ्लेक्सिबल थीं। ये भी एक बहुत बड़ी विशेषता रही, बुद्धि की शुद्धि और निर्माणता। ये भी देखा कि बाबा के अकाउंट्स में, सेंटर रोल होते हुए भी कोई अहम् नहीं। किसी के ऊपर किसी भी प्रकार का अपना कोई प्रभाव नहीं। किसी भी प्रकार का, किसी को कोई वायब्रेशन नहीं कि ये मेन रोल प्ले करने वाली हैं। बिल्कुल गुप्त, तो जितनी गुप्त, उतनी प्रत्यक्ष।

भगवान का भण्डारा व भण्डारी दोनों एकदम लगावमुक्त, अहम मुक्त सम्भाला। साथ-साथ यज्ञ में रहने वाले हरेक यज्ञ वत्सों का भी ख्याल रखना क्योंकि खजांची होने के नाते किसको क्या चाहिए, किसकी क्या आवश्यकता है उन सबको ध्यान में रखा। किसी को खर्च चाहिए होता तो ख़र्च के लिए उनके पास ही जाना होता था। और बड़े प्यार से सबको संतुष्ट करतीं। हिसाब में भी एकदम एक्यूरेट थीं। ऐसे थीं एक्यूरेट, एवररेडी, सदा सहयोगी हमारी ईशू दादी। ऐसी महान तपस्विनी, ऑनेस्टी की पराकाष्ठा से विभूषित सृष्टि रचयिता की चित्रगुप्त दादी ईशू को भावभीनी श्रद्धासुमन।

दादी ने सिखाया 'ओके' का पाठ - ब्र.कु. कविता दीदी

हमारी प्राणप्यारी, अति स्नेही 'दादी ईशू जी' जिनका बाबा का दिया हुआ नाम पूर्णशांतामणि है। दादी जी का लौकिक जन्म सिन्ध हैदराबाद कराची रॉयल घराने में हुआ। लेकिन दादी जी सम्पन्न परिवार से होते हुए भी शांत चित्त, अन्तर्मुखता की खान थीं। दादी जी जितनी हर्षित मुख थीं, उतनी गम्भीर भी। उनके तेजस्वी नयन जैसे कि बाबा की ही याद दिलाते। हरेक व्यक्ति महसूस करता था कि जैसे हम बाबा से मिलकर आये हैं। दादी जी बहुत उपराम रहती थीं। किसी भी कार्य व्यवहार में बाबा और ड्रामा ये दोनों बातें उनके मन में पक्की थी। दादी जी हमेशा हरेक भाई-बहनों को अपनेपन की भासना देतीं, उन्हें इतना प्यार-दुलार देती जिससे वे महसूस करते थे कि ये मेरी माँ है। इस तरह से हरेक को अपने अलौकिक प्यार में बांध देती थी।

दादी जी बहुत सहनशील भी थीं। उन्हें कोई तकलीफ भी होती तो वे कभी भी अपने चेहरे से ब्यां नहीं होने देती थीं। कोई भी उन्हें पूछता कि दादी जी कैसे हैं, तो वे हमेशा यही कहती कि मैं सदा 'ओके' हूँ। और दोनों हाथ ऊपर करके खुशी का इज़हार करती और औरों को भी खुशी और आनंद से भर देतीं।

जब कभी दादी जी की थोड़ी तबियत ऊपर-नीचे होती तो जब हम उनको हॉस्पिटल लेकर जाते, डॉ. दादी जी से पूछते कि दादी जी आपको क्या हुआ है तो दादी जी डॉ. को भी यही कहतीं कि मैं सदा 'ओके' हूँ। डॉ. भी सोच में पड़ जाते कि कैसे हम इनकी बीमारी का इलाज करें। फिर डॉ. मेरे से पूछते थे कि दादी जी को क्यों लाये हो? और सारी रिपोर्ट देखकर ही इलाज करते थे।

ऐसी बहुत-सी यज्ञ की बातें हैं जो दादी जी हमें सुनाते थे। ब्रह्मा बाबा कैसे पालना करते थे, मम्मा के बारे में, दादी जी के बारे में कि वो कैसे पुरुषार्थ करते और वे इतना कारोबार करते भी कैसे हल्के रहते, ये सब भी बतातीं। दादी का लौकिक नाम तो 'ईश्वरीय' था, इसलिए उनको प्यार से ईशू कहते थे। दादी जी ने बताया कि जब मेरी आयु 8 वर्ष की थी, तब हमारा घर और बाबा का घर पास-पास था। उन्होंने बताया कि जब वे एक दिन घर से बाहर निकले तो साकार बाबा से मुलाकात हुई। उस पहली मुलाकात में ही उनको ऐसी भासना आई जैसे कि ये कोई साधारण व्यक्ति नहीं, ये तो साक्षात भगवान हैं। और बाबा ने देखते ही दादी जी को कहा कि 'आओ बच्ची आओ'! दादी जी तुरंत बाबा की गोद में चले गये। बाबा ने कहा आओ बच्ची चलें...उसी समय निश्चयबुद्धि हो दादी जी बाबा के साथ चल पड़ीं। ये भी नहीं सोचा कि हम कहाँ जा रहे हैं। उसके बाद दादी जी अपने लौकिक घर कभी वापिस नहीं गये। फिर दादी जी का निश्चय 'एक बल एक भरोसा' देख उनके लौकिक परिवार के सभी सदस्य सरेंडर हो गये।

बाबा के घर में ही सत्संग चलता था, जिसका नाम 'ओम मंडली' था। बाबा जब सत्संग चलाते थे तो को रोज़ नये-नये साक्षात्कार, कभी श्रीकृष्ण के साथ रास कर रहे, कभी शूबी रस पीना। ऐसे रोज़ कोई न कोई नये अनुभव होते। दादी जी यज्ञ के कारोबार में हमेशा बिज़ी रहतीं, बाबा जब पत्र लिखते तो वो सिंधी भाषा में होते थे, दादी जी फिर उनको हिन्दी में ट्रांसलेट करके लिखती।

बाबा ने दादी जी को छः डिपार्टमेंट सम्भालने के निमित्त बनाया। दादी जी ने सभी डिपार्टमेंट्स को सुचारू रूप से सम्भाला। उन्होंने जी हुज़ूर का पार्ट बजाया और आज्ञाकारी, ईमानदारी, वफादारी की मिसाल दी। हमने बाबा को साकार में नहीं देखा लेकिन दादी जी ने साकार बाबा की पालना की अनुभूति कराई। यह स्वयं परमात्मा शिव बाबा का यज्ञ है इसका क्या महत्व है वो भी समझातीं। ऐसी दादी जी के अंग-संग रहने का मुझे सौभाग्य मिला। दादी जी आज भी हमारे साथ हैं। उनकी शिक्षायें हम कभी भी भूल नहीं पायेंगे।